# नजानू की कहानियां

१०

निकोलाई नोसोव



# और फट गया गुब्बारा...



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नज़ानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१०

# और फट गया गुब्बारा...

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





कुछ लोग सोचते हैं कि हवा में जितना ऊपर उठते जायें, वह उतनी ही गर्म होगी, लेकिन यह सच नहीं है। जितना ऊपर उठेंगे, उतनी ही ठंड होगी। ऐसा क्यों? इसलिये कि सूरज हवा को कम गर्म कर पाता है, क्योंकि सूर्य की किरणें बिना किसी रुकावट के उसके पार निकल जाती हैं। नीचे हवा हमेशा गर्म होती है। सूरज अपनी किरणों से ज़मीन को गर्म करता है, हवा ज़मीन से ठीक उसी प्रकार गर्म होती है, जैसे गर्म स्टोव से। गर्म हवा ठंडी हवा से हल्की होती है और इसीलिये ऊपर उठती है। वह जितनी ऊपर उठती है, उतनी ही ठंडी होती जाती है। इसीलिये बहुत ऊंचाई पर हमेशा ठंड होती है।

जब बौने अपने गुब्बारे में बहुत ऊंचाई पर पहुंच गये तो उन्होंने ऐसा ही महसूस किया। सर्दी के मारे उनकी नाक और गाल लाल हो गये। सभी उछलने और हाथ-पांव रगड़ने लगे, जिससे कुछ तो गर्मी आये। सर्दी के मारे सबसे ज़्यादा तो भुलक्कड़ जम गया, जो अपनी टोपी घर पर ही भूल गया था। बेहद ठंड से उसकी नाक के नीचे बर्फ़ की झालर सी लटक आयी थी। वह पतझड़ की सूखी पत्ती की तरह कांप रहा था और पूरे समय उसके दांत किटकिटा रहे थे।

"बस, बहुत हो गया दांत किटकिटाना," श्रीमान बड़बड़िया झल्लाकर बोला। "यहां वैसे ही ठंड है, और ऊपर से यह दांत किटकिटा रहा है!"

"लेकिन ग़लती मेरी तो नहीं है कि ठंड है," भुलक्कड़ ने कहा।

श्रीमान बड़बड़िया ने अपनी जगह से उठकर कहा:

"मुझ से बर्दाश्त नहीं होता जब कोई कान के पास दांत किटकिटाता है! मुझे खुद कंपकंपी होने लगती है।"

वह ट्यूबेश के साथ बैठ गया, लेकिन वह भी अपने दांत किटकिटा रहा था। श्रीमान बड़बड़िया ने उसे शक की नज़र से देखा:

"बात क्या है? शायद, तुम मुझे चिढ़ाने के लिये दांत किटकिटा रहे हो?"

"चिढ़ा बिल्कुल नहीं रहा हूं, ठंड है ही।"

श्रीमान बड़बड़िया उठकर दूसरी जगह बैठ गया। उसने कई बार जगह बदली और बस दूसरों को परेशान करता रहा।

ठंड से उड़न गुब्बारा पाले से ढक गया और छुटकों के सिर पर ऐसे चमकने लगा, जैसे शुद्ध चांदी से बना हो। धीरे-धीरे खोल में हवा ठंडी होने लगी और गुब्बारा नीचे उतरने लगा। कुछ देर बाद वह बड़ी तेज़ी से नीचे गिरने लगा। रेत के बोरे भी खत्म हो गये थे और अब गिरना रोका नहीं जा सकता था।

"खबरदार, खतरा!" शरबतिया चिल्लाया।

"मर गये!" नजानू ज़ोर से चिल्लाया और बेंच के नीचे छिप गया।

"उतरो!" जानू उसे देखकर चिल्लाया।

"क्यों?" नजानू ने बेंच के नीचे से जवाब दिया।

"पैराशूट से कूदेंगे।"

"मैं यहीं ठीक हूं," नजानू ने उत्तर दिया।

जानू ने ज़्यादा सोच-विचार नहीं किया, उसकी गरदन पकड़ी और उसे बेंच के नीचे से घसीट निकाला।

"तुम कौन होते हो?" नजानू चिल्लाया। "मैं तुम्हारी शिकायत कर दूंगा।"

"चिल्ल-पों मत कर!" जानू ने शांत भाव से कहा। "देख, जैसे ही मैं पैराशूट से कूदूं, वैसे ही मेरे पीछे कूदना, डरने की बात नहीं है।"

नजानू की जान में जान आयी। जानू झाबे के छोर पर चला गया।

"देखो, भाइयो!" वह ज़ोर से बोला। "सब मेरे पीछे बारी-बारी कूदना। जो नहीं कूदेगा, उसे गुब्बारा लेकर ऊपर चला जायेगा। अच्छा, पैराशूट तैयार करो... चलो!"

जानू सबसे पहले कूदा। उसके पीछे जल्दबाज़, लेकिन इससे ही एक अनजानी स्थिति





पैदा हो गयी। पैराशूट खोलने से पहले कूदने के बजाय हड़बड़ी में जल्दबाज़ ने पहले पैराशूट खोला और फिर कूदा। इससे पैराशूट झाबे के किनारे में अटक गया। जल्दबाज़ का पैर डोरियों में अटक गया और वह सिर के बल नीचे लटक गया। ठीक मछली की कंटिया में लगे कीड़े की तरह वह अपने हाथ-पैर मारने लगा। उसके लाख कोशिश करने पर भी पैराशूट उलझा ही रहा।

"भाइयो!" डाक्टर टिकियावाला चिल्लाया। "अगर पैराशूट छूट गया, तो जल्दबाज़ का सिर ज़मीन से जा टकरायेगा!"

छुटकों ने पैराशूट को हाथों से पकड़कर जल्दबाज़ को वापस झाबे में खींच लिया।

नजानू ने देखा कि गुब्बारा फिर से ऊपर की ओर उड़ने लगा है। वह चिल्लाया: "रुक जाओ, भाइयो! अब किसी को भी कूदने की ज़रूरत नहीं है! हम फिर ऊपर उड़ रहे हैं!"

"हम फिर से ऊपर क्यों उड़ रहे हैं?" कदाचित् अचरज में पड़ गया।

"अरे भई!" बड़बड़िया ने उत्तर दिया। "जानू के कूद जाने से गुब्बारा हल्का हो गया।"

"हमारे बिना जानू क्या करेगा?" गुलगुलिया ने पूछा।

"क्यों, क्या हुआ..." कदाचित् ने कंधे उचकाये, "धीरे-धीरे अपने घर चला जायेगा।"

"और हम जानू के बग़ैर क्या करेंगे?"

"सोचता है," नजानू ने उत्तर दिया, "जैसे जानू के बिना हम कुछ हैं ही नहीं।"

"किसी न किसी की तो सुनना ज़रूरी है," गुलगुला ने कहा।

"मेरी सुनोगे," नजानू ने घोषणा की। "अब मैं तुम लोगों का नेता हूं।"

"तुम?" बड़बड़िया आश्चर्य में पड़ गया। "ऐसी अक़्ल से हमारे नेता बनोगे?"

"अच्छा, तो यह बात है! ऐसी अक़्ल से नहीं बन सकता?" नजानू चिल्लाया।





"अच्छी बात है, अगर तुम्हें मेरी अक़्ल पसन्द नहीं है तो नीचे कूदकर ढूंढ़ो अपने जानू को!"

बड़बड़िया ने नीचे देखकर कहा:

"अब मैं कहां ढूंढूंगा? हम बहुत दूर उड़ आये हैं। तभी सबको कूद जाना चाहिये था।"

"नहीं, कूदो, कूदो!"

बड़बड़िया और नजानू बहस करने लगे और शाम तक बहस करते रहे। जानू था नहीं और उन्हें अब कोई रोक नहीं सकता था। सूरज डूबने लगा। हवा तेज़ हो गयी। गुब्बारा और भी ठंडा होने लगा और फिर से नीचे उतरने लगा, लेकिन बड़बड़िया और नजानू की नोक-झोंक चलती रही।

"बस, बहुत हो चुकी बहस," शरबतिया ने नजानू से कहा। "अगर तुमने नेता बनने का फ़ैसला कर ही लिया है, तो कुछ सोचो। देखो, हम फिर से नीचे जा रहे हैं।"

"अब सोचूंगा," नजानू ने उत्तर दिया।

वह बेंच पर बैठ गया और माथे पर उंगली रखकर सोचने लगा। गुब्बारा और भी तेज़ी से नीचे उतरने लगा था।

"अब सोचने की क्या बात है?" मोड़ू ने कहा। "अगर हमारे पास रेत के बोरे होते तो हम एक बोरा फेंक देते।"

"ठीक है," नजानू ने हां में हां मिलायी। "लेकिन अगर हमारे पास और बोरे नहीं हैं, तो तुम में से एक को बाहर फेंकना पड़ेगा। किसी को पैराशूट से फेंक देते हैं– गुब्बारा हल्का हो जायेगा और हम फिर ऊपर उड़ने लगेंगे।"

"किसको फेंकें?"

"किसको?" नजानू ने सोचते हुए कहा। "उसे फेंका जाये, जो सबसे ज़्यादा बोलता है।"

"तुम्हारी यह बात मैं नहीं मानता," बड़बड़िया ने उत्तर दिया। "यह भी कोई बात हुई कि सबसे ज़्यादा बोलनेवाले को फेंका जाये! फेंका उसे जाना चाहिये जो सबसे भारी है।"

"ठीक है," नजानू सहमत हो गया। "गुलगुला को फेंक देते हैं। वही सबसे मोटा है।"

"ठीक है," शरबतिया ने हां में हां मिलायी।

"क्यों?" गुलगुला ने चिल्लाकर कहा। "कौन सबसे मोटा है? मैं सबसे मोटा हूं? शरबतिया मुझ से मोटा है!"

"इसको देखो!" शरबतिया ने ज़ोर से हंसकर गुलगुला की ओर उंगली दिखाते



हुए कहा। "देखो, भला, मैं इससे मोटा हूं! हा-हा! चलो, नापकर देखते हैं!"

"चलो-चलो, ठीक है," गुलगुला ने उस पर मुर्गे की तरह झपटते हुए कहा।

सबने गुलगुला और शरबतिया को घेर लिया। नजानू ने जेब से डोरी निकाली और गुलगुला की कमर पर लपेटी। बाद में ऐसे ही शरबतिया को भी नापा और पता लगा कि शरबतिया थोड़ा नहीं, बल्कि गुलगुला से डेढ़ गुना मोटा है।

"यह ठीक नहीं है!" शरबतिया उस पर चिल्लाया। "गुलगुला ठग रहा है! मैंने देखा था कि वह अपना पेट सिकोड़ रहा था!"

"मैंने पेट-वेट कुछ नहीं सिकोड़ा था!" गुलगुला ने सफ़ाई देते हुए कहा।

"नहीं, सिकोड़ा था! मैंने देखा था। चलो, फिर से नापते हैं!" शरबतिया ज़ोर से चिल्लाया।

नजानू गुलगुला को फिर से नापने लगा और शरबतिया चारों तरफ़ घूमते हुए चिल्लाया:

"ए-ए! क्या? मुंह फुला रहे हो?"

"मैं क्यों मुंह फुलाने लगा?" गुलगुला ने उत्तर दिया। "अगर मुंह फुलाऊंगा, तो ज़रूर तुमसे मोटा लगूंगा।"

"चलो, ठीक है, मुंह मत फुला। और पेट सिकोड़ने का तुमको कोई हक़ नहीं

है। भाइयो, देखो, यह क्या कर रहा है! ईमानदारी कहां है? तनिक भी ईमानदारी नहीं है! यह तो सरासर ठगी है!"

नज़ानू ने गुलगुला को नापने के बाद उसी नाप से शरबतिया को नापा, और इस बार पता लगा कि दोनों की मोटाई एक जैसी है।

"दोनों को फेंकना पड़ेगा," नज़ानू ने कंधे उचकाये।

"दोनों को क्यों, जब एक ही काफ़ी है!" शरबतिया ने कहा।

शिकारी गोलीबाज़ ने झाबे से नीचे देखा कि ज़मीन बड़ी तेज़ी से पास आती जा रही है।

"सुनो, नज़ानू," उसने कहा, "जल्दी फ़ैसला करो, नहीं तो हम धड़ाम से ज़मीन पर जा गिरेंगे!"

"चुनना ज़रूरी है, कि किसे पैराशूट से कुदायें," कदाचित् ने कहा।

"बिलकुल सही!" शरबतिया बोला। "मोटे और पतले सभी में से चुनना पड़ेगा कि किसी को भी बुरा न लगे।"



"ठीक है, चलो, गिनते हैं," नज़ानू मान गया।

सबने घेरा बना लिया और नज़ानू ने सब पर उंगली लगा-लगाकर गिनती शुरू कर दी:

"अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बौ
अस्सी-नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा
चोर निकलके भागा!"

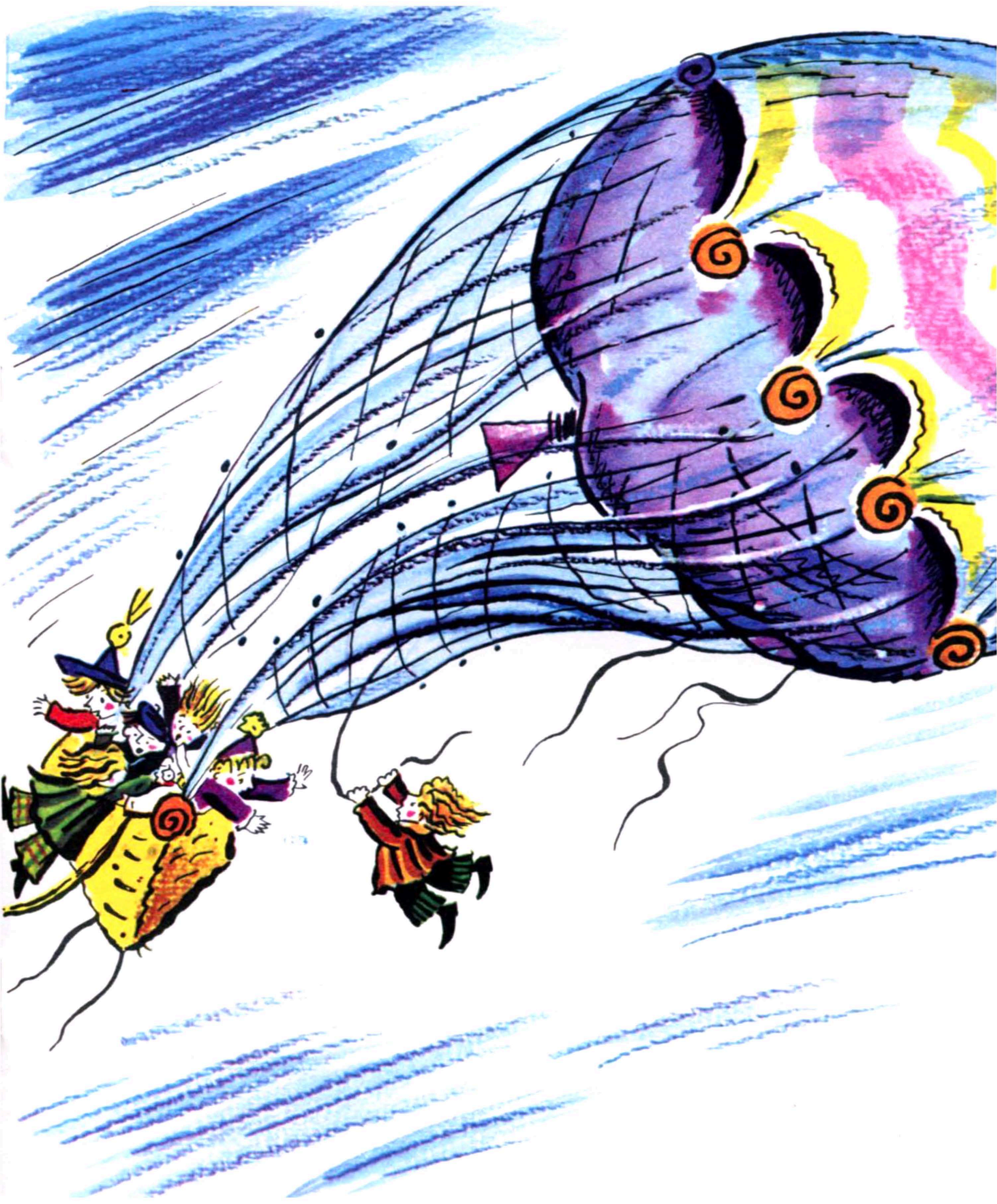
बाद में कहा:

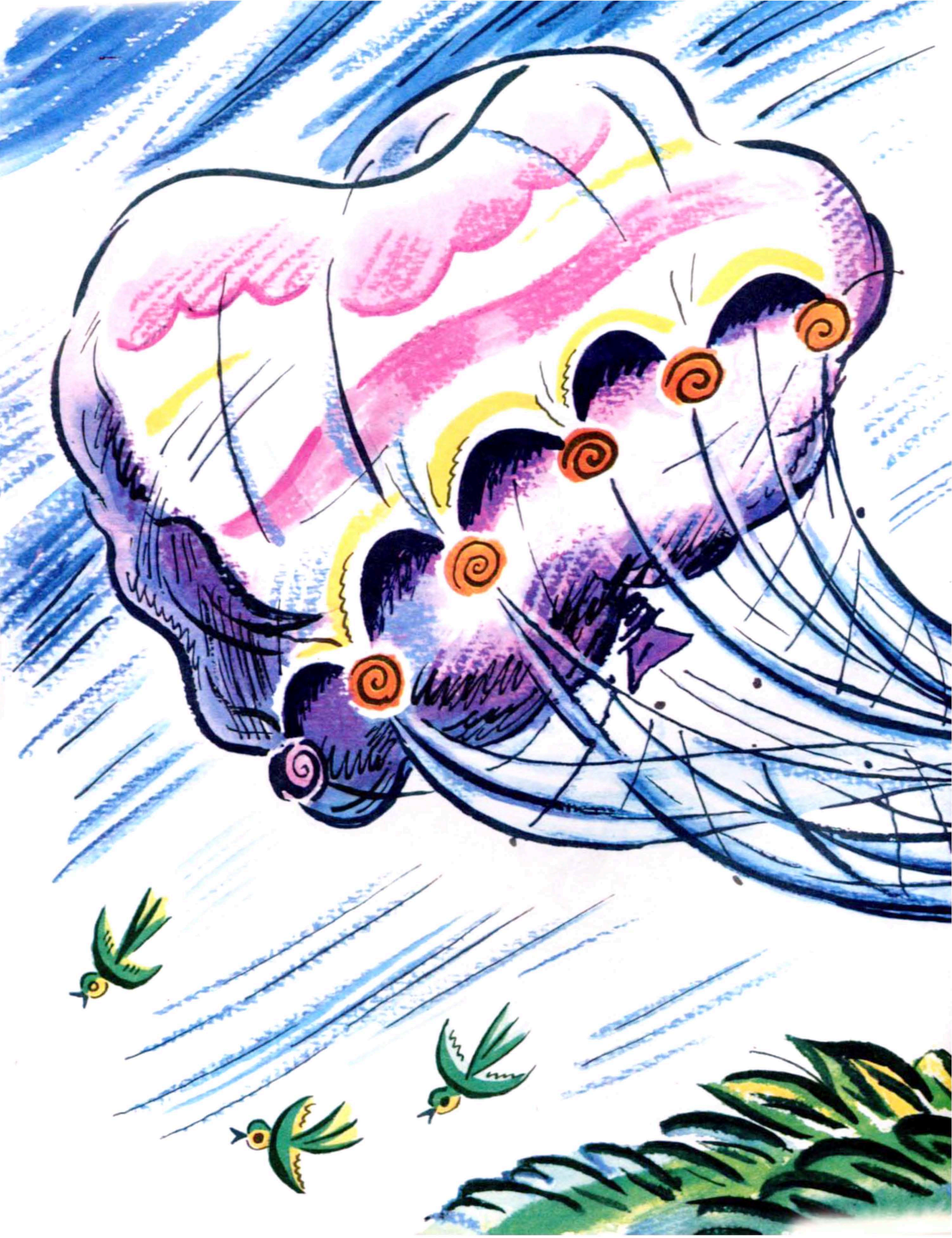
"मुझे ऐसे चुनना अच्छा नहीं लगता। मुझे यह पसंद नहीं," और दूसरी तरह चुनना शुरू किया:

"पोशम पार, भई, पोशम पार
डाकुओं ने क्या किया
सौ रुपये की घड़ी चुरायी
अब तो जेल में जाना पड़ा..."

इतने में झाबा ज़ोर से ज़मीन से जा टकराया और उलट गया। कदाचित् ने दोनों हाथों से शक्कू को पकड़ा और शक्कू ने कदाचित् को और वे एकसाथ झाबे से बाहर गिर पड़े। उनके पीछे सारे छुटके मटर के दानों की तरह बिखर गये। सिर्फ़ नज़ानू झाबे के किनारे से अटका रह गया क्योंकि गुर्रा ने दांतों से उसकी पैंट पकड़ रखी थी। ज़मीन से टकराने के कारण गुब्बारा गेंद की तरह ऊपर की ओर उछला और हवा में बड़ा-







सा गोला बनाते हुए नीचे गिरने लगा। झाबा फिर ज़मीन से टकराया और घिसटने लगा। ग़ुब्बारा कान फाड़ देनेवाली आवाज़ के साथ किसी ठोस चीज़ से टकराकर फट गया। गुर्रा हवा में पलटा और अजीब तरह से किकियाते हुए एक तरफ़ भागा। नजानू झाबे से गिरा और ज़मीन पर अचेत पड़ा रहा।

इस तरह हवाई यात्रा ख़त्म हो गयी।



Н. Носов
АВАРИЯ
*На языке хинди*

N. Nosov
AN ACCIDENT
*In Hindi*

सोवियत संघ में मुद्रित









प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तक में पढ़ेंगे :

**अपरिचितों के बीच**

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-001501-4